॥ श्रीः ॥

केशवमाहात्म्य भाषा

जिसे

हैदराबाद (दक्खन) निवासी श्रीयुत राजा गिरिधारीप्रसाद जी महबूब नवाज-वंत बहादुर ने संस्कृत ग्रन्थ का मूल अभिप्राय लेकर भाषा रसिकों और केशवभक्तों के निमित्त प्रकाश किया।

यह ग्रन्थ श्री काशी जी विश्वनाथपुरी में शुद्ध हो के भारतजीवन सम्पादक बाबू रामकृष्ण वर्म्मा द्वारा

काशी।

भारतजीवन प्रेस में मुद्रित हुवा।

संवत् १८५२।

श्रीगणेशाय नमः ।

अथ केशवमाहात्म्य भाषा प्रारंभः।

चौपाई ।

पहिले श्री गणेश को ध्याऊं ।
और सरस्वती ध्यान लगाऊं ॥
गुरूकृपा पूरन होइ जावै ।
गिरधारी केशवगुन गावै ॥
आदि विष्णु जग मैं वपु धाऱ्यो ।
आपहि अपना रूप निहाऱ्यो ॥
ज्यों सुगंध पुष्पन के माहीं ।
न्यारो अरु व्यापक सव ठाहीं ॥
एक अंक विन्दू जव पायो ।
शतसहस्र लक कोतल खायो ॥

जैसो भानु कोटि घट जल मैं ।
यों दर्शत प्रभु सब अस्थल मैं ॥
जल दर्पन मैं मुख दिखरायो ।
अपनो तेज स्वरूप बतायो ॥
मुकर मांहि प्रतिबिम्ब समाया ।
व्यापक व्है न्यारो दरसाया ॥

दोहा ।

निर्गुन सगुन सरूप धरि कीन्यो सब संसार ।
एक अनेक भयो जगत जानै जाननहार ॥

चौपाई ।

सुनो नैमिषारन मैं भाई ।
सनकादिक ज्ञानी ऋषिराई ॥
प्रश्न सूत जू सों यों कीन्हे ।
श्रीकेशव कब जग बपु लीन्हे ॥
केहि कारन औतार धराये ।

कौन भगत तारन जग धाये ॥
आदि विष्णु निर्गुन नारायण ।
प्रगट भयो जग मैं केहि कारण ॥
वाकी कथा कहो सुखदाई ।
जो मन को संसय मिटजाई ॥
इतनी सुनि कह सूत विज्ञानी ।
सुनिये कथा परम सुखदानी ॥
बावन भविष पुरान के माहीं ।
यों बरन्यो है व्यास गुसांई ॥
श्रीकेशव स्वामी करतारा ।
जिनके गुन हैं अपरंपारा ॥

दोहा ।

सब बरनन मैं करत हूं सुनिये चित्त लगाय ।
वो महिमा सब कहन कों मो मन है अति चाय ॥

चौपाई ।

एक सहस्र प्रबल था राजा ।
चन्द्रबंसि-राजन सिरताजा ॥
वाको तीन पुत्र बड़भागी ।
प्रभु दीन्हे नीके अनुरागी ॥
प्रथम ज्येष्ठ हैहै पहचानो ।
दूजो राजा नाम बखानो ॥
तीजो बेनू नाम धरायो ।
धर्म्मनेत्र हैहै को जायो ॥
धर्म्मनेत्र सुत कार्त पछानो ।
कार्त पुत्र कृतबीर बखानो ॥
कृत्तबीर दीनो रघुराई ।
सुत सहस्र अर्जुन सुपदाई ॥
वह दत्तात्रेय ध्यान लगायो ।
दो भुजमै दसशत भुज पायो ॥

अतिवलवान भयो जग माही ।
ताको जीत सक्यो कोउ नाही ॥

दोहा ।

सप्तदीप नौ खण्ड मैं राज कियो वलवान ।
चक्रवर्ति राजा भयो जीत्यो सकलजहान ॥

चौपाई ।

दस सहस्र सम्वत तप कीनो ।
दत्तात्रै तव दर्शन दीनो ॥
होय प्रसन्न कह्यो हे राजा ।
इतनो तप कीन्यो केहि काजा ॥
राजा कह्यो वरदान जु दीजे ।
मोहि सहस्र भुजा वकसीजे ॥
औ दीजे मोको वल भारी ।
जग मैं हारूं नहि वलिहारी ॥
विजय पाउं जहां जुद्द मचाऊं ।

बलवानन को जीत हराऊं ॥
मेरे मन मो धर्म्म बढ़ाओ ।
दुर्वुद्धी सब दूर दुराओ ॥
सब राजन मैं श्रेष्ट लखाऊं ।
चक्रवर्ति राजा कहलाऊं ॥
दत्तात्रै स्वामी वरदीने ।
अरु वाको उपदेश ये कीने ॥

दोहा ।

केशव प्रभु भगवान की करि पूजा धर ध्यान ।
तेरी इच्छा कामना पूरन होइहै जान ॥

चौपाई ।

वासुदेव केशव जगभूपा ।
शेषशायि निर्गुन गुन रूपा ॥
सर्वज्ञ पराजित कहलावै ।
नील-कमल सम वरन सुहावै ॥

सुन्दर स्याम कमल चक्रधारी ।
निर्गुन शांत जगत-आधारी ॥
श्रीलक्ष्मी वक्षस्थल सोहै ।
बनमाला गल में मन मोहै ॥
पीतवस्त्र सोभा मन भावै ।
चार भुजा सुन्दर दरसावै ॥
दो भुज शंख चक्र अनुराजै ।
दो भुज गदा पद्म सुख साजै ॥
हार केयूर मुकट अति भारी ।
अंगद की शोभा बहु प्यारी ॥
सर्व लोक रचना करतारा ।
सत्व गुनी सुखदाई प्यारा ॥

दोहा ।

प्राक्तन अन्तर्यामि अरु सूक्षम रूप निहार ।
ज्योतिरूप भगवान हैं जगन्नाथ औतार ॥

चौपाई।

तम नाहिं सनातन दूजा ।
नाथ की करि ले पूजा ॥
निष्ठा से मैं फल पायो ।
जग मैं अवधूत कहायो ॥
विरंचि श्रीकेशव ध्याये ।
ल सृष्टि मैं पदवी पाये ॥
हु यह आराधन कीन्यो ।
म श्राप टार तव दीन्यो ॥
सहस्रभग नेत्र कहाये ।
दोष सब दूर दुराये ॥
दहू प्रभु के गुन गायो ।
भक्तन मैं श्रेष्ठ कहायो ॥
र विभीषण जब सिरनायो।

लंका को राजा कहलायो ॥
अत्रि ऋषी मम पिता कहाये ।
तीन पुत्र तिनहू सों पाये ॥

दोहा ।

नारि शूद्र और पातकी पापी औ चण्डाल ।
श्री केशव को ध्यान धरि होय हैं सरस निहाल ॥
एक समै एक ठौर थे ब्रह्मा औं भगवान ।
सब ऋषि जग उपकार हित प्रश्ण किये तहँ आन॥
प्रथमाध्याय पूरन कियो केशव प्रभु भगवान ।
गिरधारी परसाद को दास आपनो जान ॥
इति श्रीवामनपुराणे केशवमाहात्म्ये प्रथमोध्यायः।

चौपाई ।

श्रीकेशव प्रभु के गुन गाऊं ।
दूजी अध्या सार सुनाऊं ॥
एक समै सब ऋषि समुदाई ।
ब्रह्मा जी सों पूछे जाई ॥

ाव प्रभु की कथा सुनाओ ।
ो सब विस्तार बताओ ॥
न देस केहि अस्थल धाये ।
ुन रूप धरि दरस दिखाये ॥
न स्थापित कर फल पायो ।
की प्रतिमा कौन बनायो ॥
ानाथ की पूजा कीन्यो ।
ान्नाथ तेहि क्या फल दीन्यो ॥
ा कहैं सुनो ऋषिराई ।
। जीवन को है सुखदाई ॥
ी कथा श्रवन कर लीजे ।
ं पाप कों नास करीजे ॥

दोहा ।

इच्छा औ कामना जेहि श्रवनन मिल जाय ।
औ पीड़ा शोक दख सुनतहि दूर दुराय ॥

चौपाई ।

सतयुग माहिं श्वेत इक राजा ।
प्रगट भयो राजन सिरताजा ॥
शूर वीर धर्मी औ नामी ।
सत्यसिंध दृढ़व्रत निष्कामी ॥
बुद्धि ज्ञान माहीं मन दीन्यो ।
सप्त समुद्र राज तिन कीन्यो ॥
राज भोग मिथ्या सब जान्यो ।
धर्म्म वेद क्रिया मन आन्यो ॥
था अपुत्र चिंता मन लायो ।
व्है विरक्त मन ध्यान लगायो ॥
नारद मुनि तेहि दर्शन दीन्हे ।
कृपा बहुत मुनि तापे कीन्हे ॥

राजा करि प्रणाम बैठायो ।
आदर औ सनमान बढ़ायो ॥
मुनी कहे राजा सुज्ञानी ।
तेरे मन की चिन्ता जानी ॥

दोहा ।

उदासीन क्यों रहत है श्रीकेशव धर ध्यान ।
यह उपदेश करन तुमैं मैं आयो पहचान ॥

चौपाई ।

सप्त अक्षरी मंत्र सुनाये ।
अंगन्यास सबै बतलाये ॥
करन्यास सिखलाये सारा ।
ध्यान धरो कहे बारंबारा ॥
सब पूजा की विधि सम काये ।
मन की चिन्ता दूर डुराये ॥

व्याकुल कूं निरचिन्ता कीने ।
यह उपाय सूं धीरज दीने ॥
अन्तरध्यान भये मुनिराजा ।
निरपत चल्यो भजन के काजा ॥
चित्रउत्पला के तट आयो ।
गंगा सम वह नदी लखायो ॥
विंध्याचल पर्वत सों आई ।
दक्षिण दिशा समुद्र समाई ॥
जग के ताप नसावनहारी ।
निर्मल जल उज्जलअति भारी ॥

दोहा ।

याके तट आनन्द व्हे लख्यो क्षेत्र औ धाम ।
कृष्ण देव अस्थान ढिग सुंदर पुर औ ग्राम ॥

चौपाई ।

ऋषियन को अस्थल व्हां पाया ।
ठौर ठौर तरवन की छाया ॥
हरी हरी सब भूमि लखाई ।
राजा श्वेत सरस मन भाई ॥
बहुत प्रसन्न भयो जब राजा ।
बैठ्यो आराधन के काजा ॥
केशव प्रभु को ध्यान लगायो ।
एक मास भोजन नहिं पायो ॥
निरअहार कर कीनी पूजा ।
व्है एकांत नहिं राख्यो दूजा ॥
तब परसन्न भये भगवाना ।
[illegible] भक्त आपनो जाना ॥

ध्यान माहि दर्शन तेहि दीन्हे ।
मन की इच्छा पूरन कीन्हे ॥
बड़भागी राजा जब निरख्यो ।
रूप अनूप लखत ही हरख्यो ॥

दोहा ।

कर जोरे अस्तुति करी और नवायो सीस ।
नमो नमो केशव प्रभू सब ईसन के ईस ॥

चौपाई ।

नमो नमो संकर्पण प्यारे ।
प्रद्युम्न औ अनिरुद्ध हमारे ॥
नमो नमो नारायण स्वामी ।
नमो नमो बहुरूप अकामी ॥
विष्णु रूप कों करूं प्रणामा ।
वेद है निर्गुन जाको नामा ॥

अप्रतर्क्य शुचि शुक्र कहावै ।
कमलवर्ण कर कमल सुहावै ॥
कमलनेत्र दस शत मन भावै ।
पद्मनाभ ब्रह्मा उपजावै ॥
सहसपाद औ भुजा सुहानी ।
हे बाराह रूप बरदानी ॥
नमोऽश्वमेध श्रेष्ठ वरिष्टा ।
अच्युत शरनागत के इष्टा ॥
नमो नमो माधव नारायन ।
अति गरिष्ट गोविन्द सनातन ॥

दोहा ।

बाल-कमल सम कांति शुभ बालरूप गोपाल ।
बाल सूर्य औ चन्द्र सम जाके नैन विशाल ॥

चौपाई ।

मंजुकेश वसुदेव कहायो ।
औ संभूत भूत कहलायो ॥

विष्णुरूप वसुरेत कहाये ।
मधुसूदन शुचि वस्त्र धराये ॥
नमो अनन्तहि सूक्ष्म सरूपा ।
लक्ष्मी वक्षस्थल जग भूपा ॥
नमो नमो त्रिविक्रमधारी ।
पीतांवर कटि शोभित भारी ॥
नमो सृष्टि करता रछपाला ।
क्षय कर्ता गुन वहुत विशाला ॥
निर्गुन वामन रूप धरायो ।
वामन नेत्र कर्म कर पायो ॥
नमस्कार पूजन के लायक ।
व्यक्त रूप जग के सुखदायक ॥
नमो सिद्ध भयटारन हारे ।
भव सागर से पार उतारे ॥

दोहा ।

नमो शांति शिव सोम्य हरि रुद्र उचारन नाम ।
भौ भंजन संसार को भोग देत औ धाम ॥

चौपाई ।

भव संसार रूप बनि आयो ।
वहौ सृष्टिकर्ता कहलायो ॥
दिव्य रूप कहते हैं जाको ।
सोम अग्नि शरणागत ताको ॥
सोम सूर्य सम केस सुहाए ।
गौ ब्राह्मण के हेत कहाए ॥
नमो नमो ऋग्वेद स्वरूपा ।
पद और कर्म साधना भूपा ॥
यजुर्वेद रचना के कर्ता ।
यजुर्वेद के रूप औ भर्ता ॥

श्रीमत श्रीधर भूधरदेवा ।
श्रीकांत श्रीदांत अभेवा ॥
योगजिन चेतन जब कीने ।
तिनको योग पदारथ दीने ॥
सामवेद को रूप धरायो ।
शाम धुनी वन घोर मचायो ॥

दोहा।

सामवेद ज्ञाता प्रभू श्याम गीत के रूप ।
सामवेद जाने सकल श्याम धारी जग भूप ॥

चौपाई ॥

नमो अथर्व रूप सर धाता ।
ऽथर्व ई पाद ऽथर्व कर ज्ञाता ॥
ऽथर्व वेद शत्रू जिन मारे ।
मधुकैटभ ताही ते हारे ॥

नमो क्षीरसागर के वासी ।
वेद शत्रु संखासुर नासी ॥
जोति स्वरूप रसिक के ईसा ।
भगत वासदेव जग दीसा ॥
नारायन पृथ्वी हितकारे ।
मोह रूप भव भंजन हारे ॥
गतिदाई कुपंथ हरि स्वामी ।
तेज रूप प्रभु अंतरजामी ॥
वागेस्वर और बोध कहाए ।
वाम मार्ग आधार लखाए ॥
चक्षुविशाल सरस सुखदाता ।
सुकृत धारी आदि विधाता ॥

दोहा ।

[illegible]व वन्दन करूँ वामदेव परनाम ।
[illegible]के कर्ता प्रभू भेद भंग घनस्याम ॥

चौपाई ।

जौन स्वरूप देव गुन गाए ।
दिव्य मुकुट सोभा न लजाए ॥
व्यास सरूप आपहीं धारे ।
आपहि सबै जगत संहारे ॥
विश्व स्वरूप और बसुदामी ।
योग रूप योगिन के स्वामी ॥
योग भेस यो गंडग के धारी ।
शंकर्पण प्रलंब बुधकारी ॥
मेघघोप हलधारी नाथा ।
नारायन ज्ञानिन के ज्ञाता ॥
नरकलोक उद्धार करावैं ।
ऐसो दूजो दृष्टि न आवैं ॥

दीन होय सरनागत आयो ।
नमस्कार कर सीस नवायो ॥
छाड़ो सब प्रपंच संसारा ।
हरिभक्तन चरनन मन धारा ॥

दोहा।

तीन ताप संसार के और आपदा कष्ट ।
प्रभु के नाम प्रताप तैं होय जावैं सब नष्ट ॥

चौपाई।

सब जग तुम माया मैं मोहै ।
वही मोह मेरे मन को है ॥
देह धर्म सुख नास करायो ।
सब संसार दुःख दरसायो ॥
तासौं मै प्रभु को सिरनायो ।
औ भक्ती सों चित्त लगायो ॥

मेरे पाप कुकर्म दुराओ ।
भवसागर से पार लगाओ ॥
कृपा करो मोको सुख दीजै ।
मेरी यह विनती सुनि लीजै ॥
कौन सुनै प्रभु तुम विन मेरी ।
राखत हूँ मै आशा तेरी ॥
गुरुनारद जो ज्ञान वताए ।
जोजो पूजा विधी सिखाए ॥
सो प्रमाण मैं ध्यान लगायो ।
ध्यान माहि प्रभु दर्शन पायो ॥

दोहा ।

ऐसो ही ब्रह्मा कह्यो ऋषियन सों विस्तार ।
राजा को दर्शन दियो केशव प्रभु करतार ॥

चौपाई ।

देव सहित प्रभु सन्मुख आए ।
अपनो रूप सदेह दिखाए ॥
नीलवर्ण घनस्याम विहारी ।
कमलनैन चितवनि अतिप्यारी ॥
चक्र सुदर्शन शंख विराजै ।
गदा धनुष और खड्ग नुराजै ॥
गरुड़ध्वज की शोभा प्यारी ।
कटि मैं पीताम्बर अति भारी ॥
श्रीदेवी भू देवी दो दिस ।
जुगल भए मानो दिन औ निस ॥
ऐसो तेज प्रकाश वताए ।
होय प्रसन्न दरस दिखराए ॥

औ मुख सों बोले मृदुबानी ।
हे राजा तू है सुज्ञानी ॥
तेरी निष्टा मो मन भाई ।
इच्छा सब पूरन हो जाई ॥

दोहा।

जो जो है मनकामना तेरी देहूँ आज ।
देव सहित दर्शन दिये तेरे तारन काज ॥

चौपाई।

राजा श्वेत कह्यो भगवाना ।
किरपा कर दीजे वरदना ॥
मम संतान देओ तुम स्वामी ।
उत्तम औ धर्म्मी निष्कामी ॥
नवप्रपंच तजि ध्यान लगाऊं ।
औ वैकुण्ठ धाम को पाऊं ॥
राज काज सब पुत्र सँभारे ।

वह अस्थान मै देहूं ताको ।
देव सिद्ध मुनि चाहैं जाको ॥
अष्ट अङ्ग जोगी बहु करैं ।
वो अस्थल मैं पग नहिं धरैं ।
भांति भांति के यज्ञ करावैं ।
तद्यपि परम धाम नहिं पावैं ॥
धर्म करैं राजा बहुतेरे ।
तबहुं न आवैं अस्थल मेरे ॥
ऐसो धाम देहुं मैं राजा ।
पूरन करिहौं तेरो काजा ॥
सुंदर पुत्र सुभागी देहौं ।
वासों अपनी पूजा लैहौं ॥
इस जग के सब भोग भुगाई ।
विष्णुधाम तोहि लैहुं बुलाई ॥

दोहा ।

उपाय जो कहत हों मेरो कहनो मान ।
। सैल पर जायकें मेरो कर अस्थान ॥

चौपाई ।

र तू प्रतिमा श्वेत सिला की ।
ानु न पावै सोभा जाकी ॥
। देवी भू देवी युक्ता ।
षण सहित रत्न औ मुक्ता ॥
ईं हस्त संख अनुराजै ।
ईं चक्र सुदर्शन साजै ॥
ार अभै मुद्रा कर सोहै ।
क्तन कौं निर्भय कर मोहै ॥
न्त्र विधी सों कर परतिष्टा ।
री पूजा कर धरि निष्टा ॥

नीको मन्दिर सुन्दर होवै ।
सकल जक्त माही अति सोहै ॥
मेरे निकट देव सब आवैं ।
उनहू के अस्थान सुहावैं ॥
और स्वेत गंगा लहरावै ।
जो सब जग के पाप नसावै ॥

दोहा।

केशव प्रभु को ध्यान धरि पूजा कर सुज्ञान।
मोक्ष पदारथ पायगो मेरो वचन प्रमान ॥

चौपाई ॥

औ जो जन यह अस्थल आवैं।
केशव प्रभु को ध्यान लगावैं ॥
श्वेत गंग को कर अस्नाना ।
पूजा करैं मेरो धर ध्याना ॥
उनहू को वैकुंठ ।

चौपाई ।

ब्रह्मा निकट ऋषी सब आए ।
तिनको ब्रह्मा कथा सुनाए ॥
राजा प्रभु आज्ञा जो पायो ।
मन्दिर सरस करन चित लायो ॥
विद्यावान जोतिषी आए ।
योग मुहूरत शुभ दिखराए ॥
मंत्र विधी सब जाननहारे ।
द्विज अनेक जुर आये सारे ॥
सिल्पशास्त्र के बहु विज्ञाता ।
चाकर बन्धु मन्त्रि औ भ्राता ॥
राजा की आज्ञा सों आये ।
भेरि दुन्दुभी शंख बजाये ॥
चार वेद पारायण कीने ।

ृथ्वी सोधि अर्घ तव दीने ॥
ीपक जोति कलश पै धरे ।
ी गणेश की पूजा करे ॥

दोहा।

पन की वर्षा किये अक्षत की वरसात ।
जश्वेत आनन्द होय वांधो कंकन हात ॥

चौपाई।

ृपति कलिंगदेस के आये ।
त्कल कौशिक राजा धाये ॥
चित्र सिल्पकर्ता अति सुन्दर ।
लिये साथ करिवे को मन्दिर ॥
ह सब श्वेत नृपति सों मिले ।
वेत सिला पर सवही चले ॥
वेत सिला पाषाण मगाये ।
ौका और सकट भर लाये ॥

चार खूंट के राजा सबही ।
दूतन भेज बुलाये तबही ॥
तजि अपने राजऽस्थल आये ।
बहुतक अश्व और गज लाये ॥
एक एक की सेना न्यारी ।
भीर भई तिनसों अति भारी ॥
मुक्ता रतन वस्त्र औ भूषण ।
भांतिभांति के अन औ बहु धन ॥

दोहा।

राजा के सन्मुख धरे भेट किये सब लाय ।
जती मुनी तपसी गृही वैदिक आदिक आय ॥

चौपाई।

राजा श्वेत कह्यो सब जाओ ।
मन्दिर नीको श्रेष्ट बनाओ ॥

पृथ्वी सोधि अर्घ तव दीने
दीपक जोति कलश पै धरे
श्री गणेश की पूजा करे

दोहा ।

पुष्पन की वर्षा किये अक्षत की वरसात
राजश्वेत आनन्द होय वांधो कंकन हात

चौपाई ।

नृपति कलिंगदेस के आये
उत्कल कौशिक राजा धाये
चित्र सिल्पकर्ता अति सुन्दर
लिये साथ करिवे को मन्दिर
यह सव श्वेत नृपति सों मिले
स्वेत सिला पर सवही चले
स्वेत सिला पापाण मगाये

चार खूंट के राजा सबही ।
दूतन भेज बुलाये तबही ॥
तजि अपने राजऽस्थल आये ।
बहुतक अश्व और गज लाये ॥
एक एक की सेना न्यारी ।
भीर भई तिनसों अति भारी ॥
मुक्ता रतन वस्त्र औ भूषण ।
भांतिभांति के अन औ बहु धन ॥

दोहा।

राजा के सन्मुख धरे भेट किये सब लाय ।
जती मुनी तपसी गृही वैदिक आदिक आय ॥

चौपाई।

राजा श्वेत कह्यो सब जाओ ।
मन्दिर नीको श्रेष्ट बनाओ ॥

ा की आज्ञा परमाणा ।
ा लाल जड़े पाषाणा ॥
र कनक के खंब बनाए ।
रण द्वारकपाट लगाए ॥
ुरकी शोभा अति प्यारी ।
जा पताका सोहत भारी ॥
नेक मण्डप और नियारे ।
ान के रहवास सँवारे ॥
सतरन बहुभाँति बिछाए ।
ाफल की तोरनलाए ॥
ाँदिसि बहु दीपक बारे ।
जन भए गगन के तारे ॥
ी महिमा कही न जाई ।
ासी सब रहे लजाई ॥

दोहा

वहुत निकट इस धाम के नगर वसे औ ग्राम ।
देवरूपी नारी पुरप तहां किये विश्राम ॥

चौपाई ।

विविध भांति पकवान वनाए ।
और सर्करा ढेर लगाए ॥
दूध दही नौनीत सुहायो ।
दूर दूर ग्रामन सौं आयो ॥
तंदुल पिष्ट दाल तरकारी ।
लाखों मनलाए अधिकारी ॥
और हजारन घृत के भांडे ।
करत रसोई जँह तँह पांड़े ॥
लाखों ही द्विज भोजन पाए ।
तृप्त भए संतोप लखाए ॥

तांबूल दक्षिणा दीन्हे ।
असीस दंडवत कीन्हे ॥
अन्न पाए जो आए ।
द्री भिक्षुक धन पाए ॥
आप्सरा नट बहुतेरे ।
किये धन पाय घनेरे ॥

दोहा ।

ज्ञ रचो नृपति मन मों भक्ती आन ।
निरखि जेहि ठाटको हुलसो सकल जहान॥

चौपाई ।

ईसान दिसा मैं सुन्दर ।
दुर्गा को कीन्हो मन्दिर ॥
र चक्र समान सुहायो ।
नजगत को अति मन भायो॥

आदि शक्ति देवी प्रगटाई ।
विंध्यवासिनी नाम धराई ॥
श्वेतवर्ण जग माया जानो ।
मीन नैन मीनाक्षी मानो ॥
कामदेव सम रूप सुहायो ।
वही रूप भक्तन मन भायो ॥
हेमाचल वासी महारानी ।
औ सौभाग्यदाय ठकुरानी ॥
पूरन इच्छा करनेहारी ।
चण्डी महिषासुरसंहारी ॥
सगुन रूप होय दर्शन दीनी ।
औ किरपा कर पूजा लीनी ॥

दोहा ।

श्रीदुर्गा को ध्यान धरि राजा होय अनन्द ।
सुख पायो पूजन कियो दुख के काटे फंद ॥

चौपाई ।

ग्रुद्दाम सम प्रभा सुहाई ।
। तिरनयना नाम धराई ॥
न्धस्थिता नाम भय धारी ।
न्या भय कृपाल अति भारी ॥
ट चक्र औ धनुष सुहावै ।
नेल आत्म कामी कहलावै ॥
शें धरा जग मैं कहलाई ।
र्गी त्रिनेत्रा नाम कहाई ॥
विधि राजा ध्यान लगायो ।
र जोरयो औ सीस नवायो ॥
र गुरु दत्तात्रय धरि ध्याना ।
यो पादपूजन अस्थाना ॥

उपवन नीको सरस बनाये ।
भांति भांति के वृक्ष लगाये ॥
चंपक कदम्ब मालती भरे ।
सुंदर तरु औ कोमल हरे ॥

दोहा।

सब अस्थल जब बन गयो तब राजा हरखाय।
कारज कर्ता को दिये धन औ वस्त्र बुलाय॥

चौपाई।

विद्वज्जन को कर सनमाना ।
विदा किये आदर परमाना ॥
आसिर्वाद ऋषिन सों लीने ॥
औ राजन कों आज्ञा दीने ।
फिर श्री केशव ध्यान लगायो ।
रसना सों प्रभु के गुन गायो ॥

पुनि राजा अस्तुति बहु कीन्यो ।
प्रभू कृपा करि दरसन दीन्यो ॥
राजा कह्यो श्रीभगवाना ।
दर्श दिये मोहि जेहि परमाना॥
वही तेज प्रतिमा मै भरिये ।
मेरी इच्छा पूरन करिये ॥
प्रभु वाकी बिनती सुन लीने ।
प्रतिमा माहि तेज भरि दीने ॥
जैसो रूप अनूप सुहाई ।
तैसीही प्रतिमा दरसाई ॥

दोहा ।

शिव ब्रह्मा औ रुद्र सब विनय करन कों धाय ।
सकल देव मुनि स्वर्ग के दर्शन कारन आय ॥

इति श्रीवामनपुराणे केशवमाहात्म्ये
तृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥

चौपाई ।

ब्रह्मा से सब ऋषी विचारे ।
तुम हो बुद्धी देवनहारे ॥
केशवपूजा विधी बताओ ।
वाको सार हमै समझाओ ॥
ब्रह्मा कहे सुनो ऋषिराई ।
मै सब तुमकों देहुं बताई ॥
सावधान ऽस्नान करीजे ।
नित्य कर्म अपनो करलीजे ॥
अष्ट अक्षरी मंत्र उचारो ।
केशव प्रभु पूजन चित धारो ॥
पहिले काया शुद्धी कीजे ।
ॐकार हिरदे धर लीजे ॥

ल्कीरेव से सिखा सुधारो ।
मस्तक माहि वकार निहारो ॥
इसी मंत्र सों पाप दुराओ ।
तब शरीर की शुद्धी पाओ ॥

दोहा ।

अष्ट अक्षरी मंत्र सूं न्यास करो धर धीर ।
वाम पाद से शिखा लौं सोधो सकल शरीर ॥

चौपाई ।

वाम पाद जानो ओंकारा ।
दक्षिण पाद विचार नकारा ॥
बांई भुजा वकार धरीजे ।
दक्षिण भुज श्रीकार धरीजे ॥
कै अक्षर नाभी अस्थाना ।
और शकार कण्ठ पै लाना ॥

फिर चकार कों नेत्र पै निरखो ।
और यकार सीस पै समझो ॥
शिखा नाम प्रभु को सब लीजे ।
कौंच फटिक दिग्वंधन कीजे ॥
कृष्ण कहो बलदेव निहारो ।
प्रद्युम्न औ अनिरुद्ध विचारो ।
इन नामन सों कौंच करीजे ।
फिर मन सें यह इच्छा कीजे ॥
सन्मुख श्री विष्णू की रक्षा ।
पाछे केशव प्रभु की इच्छा ॥

दोहा ।

दहिन वाम गोविन्द औ मधुसूदन को जान ।
ऊर्द्ध समझ वैकुण्ठपति अध वाराह पहचान ॥

चौपाई।

त्रिरविक्रम सब दिसा निहारो ।
गच्छ तिष्ट नरसिंह विचारो ॥
जाग्रत स्वप्न कहो वसुदेवा ।
जाको जगत न पावै भेवा ॥
याहि प्रमान विधी सब करो ।
फिर पूजा की इच्छा करो ॥
जैसी अपनी देह सुधारो ।
देव प्रतिमा न्यास विचारो ॥
सावधान होय मंत्र उचारो ।
आवाहन कारन चित धारो ॥
आवो श्रीकेशव भगवाना ।
देव मोहि रक्षा बरदाना ॥

पीठ सुमेर करो पद्मासन ।
सावधान होय लीजो पूजन ॥
पुनही मंत्र से अर्घ चढ़ाओ ।
वही मंत्र सौं चरन धुलाओ ॥

दोहा ।

मधूपर्क पुनि आचमन कीजे भक्ति समान ।
पंचामृत अस्नान औ सुद्धोदक अस्नान ॥

चौपाई ॥

पीत वस्त्र जरितार चढ़ाओ ।
श्रीकेशव मन कह हुलसाओ ॥
तीन वेद से ब्रह्मा जाको ।
गायत्री गांठी दे ताको ॥
ऐसो यज्ञउपवीत पिन्हाओ ।
पुनि श्रीकेशव मनु मन लाओ ॥

चौपाई।

त्रिरविक्रम सब दिसा निहारो ।
गच्छ तिष्ट नरसिंह बिचारो ॥
जाग्रत स्वप्न कहो बसुदेवा ।
जाको जगत न पावै भेवा ॥
याहि प्रमान विधी सब करो ।
फिर पूजा की इछा करो ॥
जैसी अपनी देह सुधारो ।
देव प्रतिमा न्यास बिचारो ॥
सावधान होय मंत्र उचारो ।
आवाहन कारन चित धारो ॥
आवो श्रीकेशव भगवाना ।
देव मोहि रक्षा वरदाना

औ घृत की वाती ले आओ ।
अग्निजोत सों जोत लगाओ ॥
ऐसो दर्पन अर्पन करिये ।
प्रभु के मंत्र माहि मन धारिये ॥
और चतुर्विध भोग बनाओ ।
पटरस सों नैवेद्य लगाओ ॥
मंत्र ध्यान धर अर्पन कीजे ।
ग्रहण करो प्रभुजी कह दीजे ॥
पूरब बास देव को धाओ ।
बांई शंकर्पण मन लाओ ॥
पश्चिम प्रद्युम्न को पहचानो ।
उत्तर को अनिरुद्धहि जानो ॥
अग्नि कोण वाराहऽस्थाना ।

जगन्नाथ श्रीकेशव राया ।
जाकी अस्तुति देवन गाया ॥
ऐसो कह चंदन कर अर्पन ।
चोया और अगंजा लेपन ॥
रतन जड़ित मुक्ता औ मणिको ।
अलंकार धारो अति नीको ॥
इक शत अष्ट पत्र तुलसी लै ।
वही मंत्र पढ़ चन्दन राषै ॥
चाहे एक सहस्र चढ़ावै ।
पुष्पहार बहु बिधि पहिरावै ॥

दोहा

वंसपती सूँ जो भई ऐसी धूप सुगंध ।
मंत्र पढ़ो अग्नी धरो मन मे होय अनंद ॥

और कामना होवै जैसी ।
जपै मंत्र सों माला तैसी ॥
या विधि सों हरिपूजा करै ।
फलपावै जो जो मन धरै ॥
चाहे पुत्र पौत्र फल पावै ।
धन मांगै धनवान कहावै ॥
होवै पूरन इच्छा मनकी ।
जावै रोग व्याधि सब तन की ॥

दोहा।

यह विधि जो पूजा करै वंदी वंद छुड़ाय ।
सुख की इच्छा जो करै दुख त्यागै सुखपाय ॥

चौपाई।

एक वार कोउ करै जो पूजा ।
जगमैं जन्म न लेवै दूजा ॥

नैऋत मै नरसिंह ठिकाना
वायव्य मै माधव को ध्या
तिरबिक्रम ईशान मनाओ

दोहा ।

चक्र धनुष और खड्ग को वाम दिशा पह
दक्षिण शंष गदा पदम लक्ष्मी को अस्थ

चौपाई ।

बाम दिशा भू-देवी सोहै
सुंदर वनमाला मन मोहै
वक्षस्थल लक्ष्मी अनुरागै
हिरदे कौ सुभ मणी बिराजै
इन षोड़श की पूजा करै
केशव प्रभु मनु मन मैं धरै
इकसौ आठ मंत्र भर लीजे

कर उद्वर्तन सीस नवावै ।
उत्तर पूजा कर हुलसावै ॥

दोहा ।

प्रभु की पूजा की विधी विप्र द्विजन सैं वूझ ।
जव विधि कुछ जाने नहीं मूल मंत्र सैं पूज ॥

इति श्रीवामनपुराणे केशवमाहात्म्ये
चतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥

चौपाई ।

दत्तात्रेय स्वामी यों कहे ।
ब्रह्मा अंतरध्यानी भये ॥
सव मुनि कौं उपदेश वताए ।
पूजा की जव विधी सिखाए ॥
केशव प्रभु की महिमा गाए ।
मुनि सव अपने अस्थल धाए ॥

मोक्ष पाय विस्नूपद पावै ।
पुण्यवान जग मैं कहलावै ॥
जप के अंत आठ मुद्रा हैं ।
कुंभ शंख औ पद्म गदा हैं ॥
कूरम और सूरयक जानो ।
गारुड़ चक्र ये आठ पहचानो ॥
मुद्रा कर फिर आरति कीजे ।
दे तांबुल पुष्पांजलि दीजै ॥
संन्मुख व्है दर्पन दिखलावै ।
चँवर करै औ छत्र चढ़ावै ॥
नृत्यहि गीत करावै सुन्दर ।
योग स्वरूप ध्यान धर अंतर ॥

चौपाई ।

जो केशव के भक्त कहावैं ।
चर अचरन मैं श्रेष्ट लखावैं ॥
उनके क्षेत्र माहि जो आवै ।
पितृन पिंड प्रधान करावै ॥
साग सतू खीर अदरक फल के ।
पिंड करै तट इस अस्थल के ॥
दस कुल पिछले वाके तरै ।
अगले दसहु स्वर्ग पग धरै ॥
रेसम को कोपीन पितम्बर ।
पहिरे जपे मंत्र निरअन्तर ॥
निश्चल इंद्रिन को वस करै ।
करि प्रणाम चरनन चित धरै ॥

हे राजा तू यह कर पूजा
ऐसो देव नहीं है दूजा
मन मै होय मनोरथ जोई
प्रभु पूजा सों पूरन होई
अजितापार दया को करत
प्रभु बिन कोइ नही दुख ह
जापर कृपा करै रघुराई
पाप ताप सब देहि दुराई
मनुष देव जो पूजा करै
भक्ती श्रद्धा मन मै धरै

दोहा ।

भक्ति प्रताप मै सिद्ध हो मन इच्छा फ

चौपाई ।

जो केशव के भक्त कहावैं ।
चर अचरन मै श्रेष्ट लखावैं ॥
उनके क्षेत्र माहि जो आवै ।
पितृन पिंड प्रधान करावै ॥
साग सतू खीर अदरक फल के ।
पिंड करै तट इस अस्थल के ॥
दस कुल पिछले वाके तरै ।
अगले दसहु स्वर्ग पग धरै ॥
रेसम को कोपीन पितम्बर ।
पहिरे जपै मंत्र निरअन्तर ॥
निश्चल इंद्रिन को वस करै ।
करि ।

वाल ग्रह औ भूत बेताला ।
कामनि सोहनि प्रेत निकाला ॥
बहु बाधा के करनेहारे ।
हैं जेते दुखदाई सारे ॥

दोहा ।

नकी पीड़ा सों छुटै सुख भोगै जग माहि ।
ो यह मंत्र जपै सदा ताको भै कछु नाहि ॥
ाह्मण क्षत्री वैश्य हो शूद्र होय चंडाल ।
ारी पुरुष जपै कोऊ होवै सरस निहाल ॥
सै रविके तेज सों अंधकार मिटिजाय ।
सै प्रभु प्रताप सों व्याधी दूर दुराय ॥
से होवैं यज्ञ दस अश्वमेध फल जान ।
शो प्रभु के दरस को तैसो है फल मान ॥
र्व कामना भोग कै जरा मरण कर नास ।
कशत कुल उद्धार कर पावै स्वर्गहि वास ॥
नक विमान बिठाय कै विस्नुलोक लै जाय ।
न्नर गंधर्व अप्सरा वाकों नृत्य दिखाय ॥

चौपाई ।

नितू त्रैकाल करै जो

एक मास प्रभु होवैं परस

मन की जो जो इच्छा ह

कृपा करै प्रभु सो सो देवै

बानप्रस्थ संन्यासी जोई

गृही ब्रह्मचारी औ होई

मंत्र जपै जो अष्ट एकशत

पावै सिद्धि जोग और शु

द्वादश वर्ष मंत्र उच्चारा

चक्रोद्धार निरंतर सारा

जो कोउ करै अधिक

पाप ब्रह्महत्यादिक